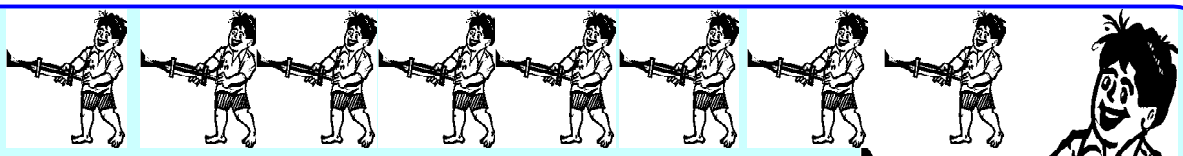

होली अंक 2025

RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 40 अंक40-41(संयुक्तांक) हल्द्वानी सम्वत् 2081 सोमवार 17 मार्च 2025 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

बलमा जै रई परदेश मैंके लागी उदेख

बलमा जै रई परदेश मैंके लागी उदेख,
सुवा उनू बिना मेरी मन नहीं लागे।
हाज़ जी सुवा उनू बिना मेरो मन नहीं लागे।
इथां चानू उथं चानू, फिर लागौर निशास।
सुवा उनू बिना मेरो मन नहीं लागे। हाँ जी सुवा।।
स्वामी ज्यू न्है गई परदेश मैंके लागी उदेख।
सुवा उनू बिना मेरो मन नहीं लागे। हाँ जी सुवा।।
लिखि लिखि पतिया उनू पास भेजनू,
नी आयी उनर सन्देश।
सुवा उनू बिना मेरी मन नहीं लागे। हो जी सुवा.....
इथां करवट ल्हिनू उथां करवट, फिर लागो निशाश।
सुवा उनू बिना मेरो मन नहीं लागे।
बलमा जै रईं परदेश, मैं के लागो उदेख।
सुवा उनू बिना मेरो मन नहीं लागें। हाँ जी सुवा।।
सासु रिसाली सौर ज्यू रिसानी, देवर बनौनी मजाक।
सुवा उनू बिना मेरो कतई चित्त नहीं लागे। हाँ जी सुवा।।
अबकी फागुन में कै। संग खेलूं होली,
कैं संगे खेलूं फाग।।
सुवा उनू बिना मेरो मन नहीं लागे।.....
बलमा जै रईं परदेश मैंके लागी उदेख....

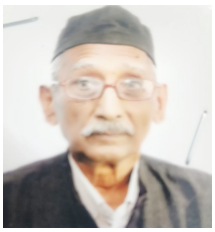

नन्दाबल्लभ पाण्डे

माता- स्व. दुर्गा देवी
पिता- स्व. कृष्णानन्द पाण्डे
पत्नी- श्रीमती चन्द्र किशोरी
जन्मतिथि- 4 जनवरी 1938
जन्म स्थान- साधारण कृषक परिवार में
वर्तमान पता- कृष्ण कुटीर ज्योलीकोट, नैनीताल
सेवा- सरकारी सेवा से निवृत्त (31 जनवरी 1996)
साहित्य सेवा- अपने मनसूबे अपनी दास्तान सहित आधा दर्जन कृतियां
परिवार सदस्य- प्रवीण चन्द्र, सन्तोषानन्द, अखिलेश्वर, रमा (पुत्र-पुत्री विवाहित)

इस अंक के सम्पादक नन्दाबल्लभ पाण्डे

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

जीवन-जगत बदरंग न हो

त्यौहार हमारे जीवन और इस जगत में रंग भरने के लिये आते हैं। विश्व में चारों ओर किसी न किसी तरह के त्यौहार वर्षभर होते हैं जो उनकी स्थितियों के अनुसार चलन में हैं। होली का त्यौहार भी इनमें से एक है। भारत के अलावा कई देशों में होली का त्यौहार अपने-अपने तरीके से मनाया जाता है। फाल्गुन माह की उमंग में होली की खुशियों का यौवन दिखाई देता है। यही कारण है प्राकृतिक रंगों व फाग-होली गायन की लम्बी परम्परा रही है। इसमें भी ब्रज और पहाड़ की होली की धूम खूब रहती है।

वर्तमान में जैसा कि होने लगा है हर कोई मोबाइल फोन में उलझा है और तीज-त्यौहारों की रौनक में रमना छोड़ रील-फोटो बनाने में व्यस्त है। किसी भी आयोजन में कुछ ने तो फोटो-रील को ऐसा मान लिया है कि इसके बिना सब अधूरा हो। ऐसे लोग वास्तविक उल्लास से बेखबर होकर अपनी फोटो प्रचार में डूबे हैं और मान बैठे हैं कि दुनिया में बस यही सत्य है। देखादेखी के इस रोग से अपसंस्कृति समाज में हाबी होती जा रही है। होली के त्यौहार में भी यह देखा जा रहा है।

मेल-मिलाप के इस त्यौहार में लोग बाहर जाने से बचने लगे हैं कि कहीं कोई रंगों की आड़ में बेहूदापन न करने लगे, राग-फाग के बहाने गलियाने न लगे, खा-पीकर अपशब्द न करने लगे। इसके बावजूद हमारी ग्रामीण परम्परा बहुत सधी हुई है जिसमें मिलजुलकर सबको आशीष दी जाती है। शहरों की बढ़त के साथ शहरों में भी कुछ जगह रसिक जनों ने होली परम्परा की सुघड़ परम्परा आरम्भ की है लेकिन मोबाइल-फोन में उलझी पीढ़ी और शार्टकट रास्ते चलकर भीड़ में सिर उठाने की चाह वाले खटपट राग में उलझे हैं। इनकी चंचलता-चतुरता से भ्रम फैलता है, इसे समझना जरूरी है। ध्यान रहे जीवन-जगत बदरंग न हो। स्थापित परम्पराएं मजबूत हों।

फसक

दाज्यू, आशीष तो देनी ही ठैरी रील बनाने के लिये नंग्योई हो रही है बल

दाज्यू, होली के दिन चार, थिरक लेने तो प्रेमचन्द, चैम्पियन, उमेश कुमार और सबको.....। बात पुरानी है हरिद्वार में पराठे और पकौड़ी का ठेला लगा करता था, हर की पैड़ी पर स्नान के बाद बब्बू ने जिद कर दी थी कि ठेले में पकौड़ी खिलाओ। दाज्यू, आप जानने ही वाले ठैरे कि नहा-धोकर जो ध्यान लगता है उसमें भूख नहीं भजन होता है लेकिन बब्बू को ठेले का स्वाद लग चुका था। वह दिन है और आज उत्तराखण्ड राज्य बनने के इतने सालों बाद भी बब्बू की जिबड़ी में मिर्च-मसाला घुला हुआ है। दाज्यू, हमें क्या? आशीष तो देनी ही ठैरी। हम तो कह रहे हैं- हमारे दुश्मन भी हजारों साल जिएं। जियो और जीने दो का सिद्धान्त सही है। दाज्यू, क्या कर सकते हैं जब झिलमिल हो रही है। दाज्यू, रील बनाने के लिये नंग्योई हो रही है बल। मुनिया भी रील बनाने के लिये मैदान से पहाड़ में फटक मारती रहती है। कह रही थी- 'हमें भाषा बचानी है, संस्कृति का उद्धार करना है, बोम्बे जाकर प्रमोट करना है, गोवा में घूमना भी जरूरी है ताकि विकास तेजी से हो।' दाज्यू, मुनिया की लरबराट देखकर हमें पसीना आने लगा था लेकिन क्या करते। जमाने की रंगत में चुपचाप पंगत में बैठने वाले ही सफल हो रहे ठैरे। ऐसे में हमने भी क्या करना हुआ।

मंत्री प्रेमचन्द का उत्तराखण्ड प्रेम देखकर हमने फूलों की खेती करने की ठान ली है। खेती ठीक-ठाक हुई तो हरिद्वार-ऋषिकेश में आर्डर दिया जायेगा। धर्मनगरी में फल-फूल की ज्यादा जरूरत होती है। वह बात अलग है कि अधर्मी लात्कार और बलात्कार में विश्वास करते हैं। जिनकी बजह से देवभूमि शर्मसार हो रही है। चोरी-चकारी, मारकाट के किस्से बहुत हो चुके। दाज्यू, अपने मजे के लिये देवभूमि को रौंदने वालों को क्या आशीष दी जाए समझ नहीं आ रहा है। दिल्ली से लेकर गुजरात, राजस्थान से लेकर केरल, मणिपुर से लेकर उड़िसा तक रंग का तौड़ाट हो रहा है। रंग-बिरंगे होल्यारों की मस्ती में अपना सुर देने के लिये छुटभैये ताकत लगा चुके हैं। दाज्यू, यही तो मजा है हमारे हिन्दुस्तान का। कुंवर दा कह रहे हैं- 'जब सब लोग पगली रहे हों तो समझ जाओ कि रोग लाइलाज है।'

दाज्यू, चाहे जो करो, हमने तो आशीष देनी ही है। जुग-जुग जीवें मित्र हमारे।

-तुम्हारी भुली झकरुवा

SIDDHIVINAYAK
SOLVENT
LLP
Sidcul Industrial Park
Sitarganj
(Udham Singh Nagar)

Happy Holi

Happy Holi

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

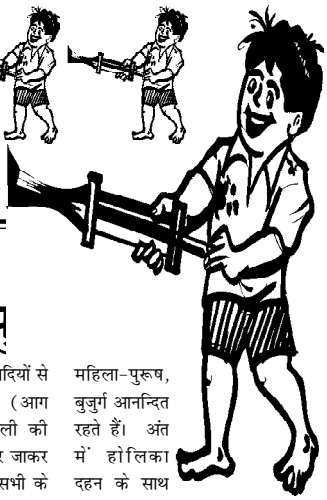

एक मोती दो हार

एक मोती दो हार, हीरा चमकी रहा है,
एक मोती भादो की रात, हीरा चमकी रहा है।
रोहिणी नक्षत्र, बुद्ध ही बारा
भर भादो सी रात, हीरा चमकी रहा है,
कृष्ण भये अवतार, हीरा चमकी रहा है,
बारह चौकी कंस राजा की,
चौकी गई सब सोयहीरा चमकी रहा है,
एक मोती दो हार, हीरा चमकी रहा है।
वासुदेव देवकी की बेड़ी खुल गई, खुल गए बजर किवाड़
सो गए सब पहरेदार, हीरा चमकी रहा है।
टोकर बालक गोद लिया हो,
चल यमुना के तीर, हीरा चमकी रहा है,।
एक मोती दो हार, हीरा चमकी रहा है।
पीछे से वनराज जो गरजे,
आगे यमुना अथाह, हीरा चमकी रहा है,
एक मोती दो हार, हीरा चमकी रहा है।
चारों तरफ भादो मेघा बरसे,
यमुना बढ़ी आसमान, हीरा चमकी रहा है।
एक मोती दो हार, हीरा चमकी रहा है।
श्री कृष्ण जी ने चरण छुवाये,
जमुना मिल गई राह, हीरा चमकी रहा है।
देवकी गोद में जनम लिया है,
यशोदा गोद खिलाय, हीरा चमकी रहा है,
एक मोती दो हार, हीरा चमकी रहा है।

गढ़ छोड़ी दे लंका रावणा

गढ़ छाड़ी दे लंका रावणा, कहत मन्दोदरी सुन प्रिय रावण।
जिनकी सिया तुम हरि लाए, राम लछिमन आवना।।गढ़..
जिनकी सीता तुम हर लाए, उनकी सेना आवना।।गढ़...
लंका गढ़ है समुन्द्र की खाई, राम कहाँ चढ़ी आवना,
मेघनाद से पुत्र हमारे, गढ़ कैसे चढ़ी आवना।।
कुम्भकर्ण से योद्धा हमारे, सहस्त्र योद्धा आवना।गढ़.....
जामवन्त से अनेको वानर, हनुमन्त योद्धा आवना।।
भाई विभीषण मिलन गयो है, लंका राह बतावना।गढ़...
छोटा कलेजा भिया की बुद्धि का, हमको देत डरावना।
नास्तिक बुद्धि विपरीत वाणी, सिर पर काल डरावना।गढ़...
तीरों से सारी सेतु बंधी है सारी सेना तरावना।
कुम्भकर्ण निद्रा भर पापी, ऊपर हस्ती कुदावना।गढ़.....
राम रावण को युद्ध भयो है, दसों शीश कटावना।
रावण मार विभीषण आयो, राम कि दुहाई करावना।गढ़...
कहत मन्दोदरी सुन प्रिय रावण, राम की सेना आवना।गढ़...

होली
की
हार्दिक
शभुकामनाएं

श्रीमती गंगा आर्या
(प्रधानाध्यापिका)
सरस्वती विहार
(निकट- न्यू तहसील भवन)
नया बाजार,
बेरीनाग

संस्कृति

मुन्स्यार की होली, शगुन के स्

जगदीश सिंह बृजवाल

होली त्यौहार का रंग देश-दुनिया में प्रतिवर्ष चढ़ता है। इसी का प्रभाव सुदूर भारत -तिबत सीमा प्रान्त स्थित मुनस्यारी एक और प्रसिद्ध नाम 'आद संसार, आद मुनस्यार' जहाँ प्रकृति के अनुपम छटाओं के बीच बसन्त का आगमन होलिकोत्सव होने लगता है और यह होली शगुन के सुर देती है। यहाँ के जिन-जिन गाँवों में होली मनाई जाती है उन गाँवों का सम्बन्ध ब्रज के होली मथुरा से लाये गये चीर (ध्वजा) से अवश्य है। कहा तो यह भी जाता है कि जिस गाँव के लोग मथुरा से न ला पाए उन्होंने अन्य गाँव से चीर झीना-झपटी से भी प्राप्त कर होली मनाने की भी ठान ली थी।

फाल्गुन माह के कृष्ण पक्ष शिवरात्रि पर्व से बैठकी होली का चलन है तथा एकादशी को ध्वजारोहण कर खड़ी होली का रिवाज वर्षों से चला आ रहा है किन्तु अब बैठकी होली को खड़ी होली के कुछ दिन पूर्व से प्रारम्भ किया जा रहा है। इसके पीछे लोगों की भागम-भाग जिन्दगी में समयाभाव का रोड़ा है।

मुनस्यारी के शौका बहुल क्षेत्र में होली कुमाउंनी जोहारी शैली में गायी जाती है। कुछ होली गीत यहाँ के रचनाकारों द्वारा स्वयं की भी होली गायन में सम्मिलित हैं। मुनस्यारी मुख्यालय को छोड़कर जैंती, नानासेम, सुरिंग, जलथ, दरकोट, दोनों तल्ला-मल्ला दुम्मर, धापा, उछैती, बोना, आदि अधिकांश गाँवों में होली का पर्व हर्षोल्लास से मनाने का रिवाज सदियों से है। होली ध्वजास्थापित धूनी (आग जलावन) स्थान में बैठकी होली की जाती है। खड़ी होली में घर-घर जाकर रंग-गुलाल से खेलते हैं। इसमें सभी के घर जाकर पकवान का जायका होल्यार खूब लेते हैं। लोक गीत संगीत गायन, नृत्य में सभी गाँव के बच्चे, युवा, महिला-पुरूष, बुजुर्ग आनन्दित रहते हैं। अंत में होलिका दहन के साथ समापन, असत्य पर सत्य के जीत का प्रतीक है होली मिलन व पूजन हमारी परम्परा आज भी जीवित है।

परम्परा

सुपाकोट की होली

उमेश चन्द्र पाण्डे

फाल्गुन मास का आगाज होते ही होली के दिन याद आ जाते हैं और शिवरात्री के बाद तो होली का माहौल बन ही जाता है। हमारे मूल ग्राम सुपाकोट -ओलियागांव जि. अल्मोड़ा की होली उस इलाके में मशहूर हुवा करती थी। होलिकाष्टमी के दिन चीर बन्धन के साथ ही होली की बैठक शुरू हो जाती और छलड़ी के बाद दम्पति टीका के दिन समापन होता था। चर्तुदशी के दिन सोमेश्वर शिव मन्दिर के प्रांगण में सुपाकोट के साथ साथ लोधघाटी, चनौदा, चौड़ा गाँव आदि जगह से होली की टीमों द्वारा होली गायन का आयोजन होता था(जो अब बन्द हो गया है) और जीतने वाली टीम को पुरस्कृत किया जाता था। सुपाकोट-ओलियागाँव की टीम हमेशा पहले नं. पर रहा करती थी जिसका श्रेय तत्कालीन होल्यार स्व. लीलाधर जोशी ओलिया गाँव, स्व. शिवदत्त पाण्डे, स्व. चन्द्रदत्त पाण्डे स्व. पूर्णानन्द पाण्डे एवं स्व. नित्यानन्द उप्रेती को मुख्य रूप से जाता था।

हमारे गाँव में मुख्य रूप से खड़ी होली होती है। अष्टमी के दिन चीर बन्धन के बाद अष्टमी, नवमी व दशमी को रात्री में बैठकी होली होती थी जिसमें मुख्य रूप से खड़ी होली का गायन होता था बीच बीच में काफी आदि रागों पर आधारित पर भी गायन होता था। एकादशी को रंग पड़ने के बाद एकादशी से पूर्णमासी तक शाम को घर घर चीर घुमाते हुवे खड़ी होली का गायन तत्पश्चात भोजन करके रात्रि तीन पहर तक बैठकी होली हुवा करती थी। पूर्णमासी को होलिका दहन के साथ छलड़ी के साथ होली के त्यौहार का समापन होता था। यह प्रथा वर्तमान समय तक बदस्तूर जारी है। पलायन के कारण जनसमूह कम होने पर भी कुछ युवा इसे काफी अच्छे व जोश के साथ सम्पन्न कराया जाता है जिसमें प्रमुख रूप से उमेश चन्द्र उप्रेती, देवेन्द्र उप्रेती, मंगल पाण्डे, विनोद पाण्डे, रमेश चन्द्र पाण्डे, धीरज पाठक आदि हैं।

ज्योतिष की बातें- 220

इस सप्ताह चन्द्रमा के अतिरिक्त अन्य किसी भी ग्रह का गोचर परिवर्तन नहीं हो रहा है। सम्पूर्ण सप्ताह शुक्र उच्चराशि मीन में, शनि मूलत्रिकोण राशि कुम्भ में, सूर्य मित्रराशि मीन में, मंगल व गुरु शत्रुराशि मिथुन व वृषभ में, बुध नीचराशि मीन में तथा चन्द्रमा सम्पूर्ण सप्ताह तुला, वृश्चिक व धनु में क्रमशः गोचर करेगा।

17 मार्च 2025 को बुध मीन राशि में वक्री गति से चलते हुए पश्चिम दिशा में अस्त हो जाएगा। बुध के अस्त होने का जातकों के ऊपर शुभाशुभ फलों में कोई विशेष अन्तर नहीं आता है फिर भी अगले 21 दिनों तक शुभ फलों में कुछ न्यूनता देखी जाएगी।

19 मार्च 2025 को शुक्र वक्र गति से चलते हुए मीन राशि में पश्चिम दिशा में अस्त हो जाएगा। अतः अगले 4 दिन शुक्र से प्राप्त होने वाले शुभ फलों में न्यूनता आएगी। साथ ही अगले 4 दिन शुभ कार्य स्थगित भी रहेंगे।

20 मार्च 2025 को सूर्य सायनमान से मेष राशि में प्रवेश करेगा। अतः इस दिन दिन और रात्रि दोनों का मान एकसमान होगा।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 111

सोशल मीडिया का बवण्डर

आजकल फेसबुक और यूट्यूब पर किसी भी बात का प्रचार आसानी से और बड़ी तेजी से हो जाता है। उसमें भी जो सच्ची ज्ञानवर्धक बात सहज रूप से लिखी जाती है उस पर लोग ध्यान नहीं देते हैं बल्कि जो बात रोमांचक अंदाज में, सनसनीखेज तरीके से और मुख्य धारा से हटकर लिखी जाती है उसको लोग आश्चर्य से देखते हैं और उसको सत्य मानते हैं। यहाँ तक कि उसका अनुकरण भी करना प्रारम्भ कर देते हैं। फिर यह नहीं सोचते कि वह बात सही है या गलत। ऐसी बातों को लोग फटाफट शेयर भी करते चले जाते हैं जिससे झूठी बात बड़ी तेजी से फैल जाती है और सच्ची बात कहीं दब के रह जाती है।

सोशल मीडिया में प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए और फॉलोअर बढ़ाने के लिए लोग मुख्य धारा से हटकर बात लिखना पसन्द करते हैं भले ही वह पूर्णतः झूठ हो और सच्चा व्यक्ति फॉलोअर बढ़ाने के चक्कर में नहीं पड़ता है। सोशल मीडिया में असत्य और अर्धसत्य बातें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में फैल रही हैं चाहे वे धार्मिक हों, आध्यात्मिक हो, राजनीतिक हों, ज्योतिष सम्बन्धित हों, स्वास्थ्य सम्बन्धित हों, इतिहास से सम्बन्धित हों अथवा अन्य किसी भी विषय से सम्बन्धित हों, असत्य और अर्धसत्य बातें सोशल मीडिया के द्वारा अधिकांश लोगों की भेड़प्रवृत्ति होने के कारण व्यापक रूप से समाज में फैल चुकी हैं। सैकड़ों उदाहरणों में केवल एक ही उदाहरण दूँगा जैसे- '144 साल बाद महाकुम्भ' आदि आदि ।

ऐसी स्थिति में मेरे विचार से सोशल मीडिया में आई हुई किसी बात को तत्काल सत्य नहीं माने लेना चाहिए बल्कि उस बात को सोशल मीडिया के अतिरिक्त अन्य माध्यमों से भी प्रमाणित कर लेना चाहिए तभी सत्य मानना चाहिए और बिना सोचे समझे किसी बात को शेयर करना झूठ को बढ़ावा देने के समान है।

-ओंकार नाथ कोष्टा

होली की हार्दिक शभुकामनाएं
गणेश सिंह रावत
पत्रकार, दन्या (अल्मोड़ा)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

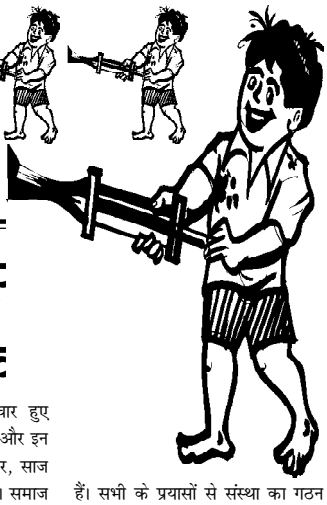

जसुली बूढ़ी सौक्यानी जीर्णोद्धार और प्रबन्धन स
का सुयालबाड़ी में अप्रैल माह में वार्षिकोत्सव

अल्मोड़ा/हल्द्वानी। दानवीरांगना अमा जसुली की खीनापानी सुयालबाड़ी स्थित प्राचीन धर्मशाला के जीर्णोद्धार और सौन्दर्यीकरण के बाद अप्रैल माह में भव्य आयोजन की तैयारी है।

जसुली बूढ़ी सौक्यानी जीर्णोद्धार और प्रबन्धन समिति द्वारा 13 अप्रैल रविवार को वार्षिकोत्सव बनाने का निर्णय लिया है। आयोजन को लेकर समिति ने सभी से अधिकाधिक जुड़ने व सहयोग की अपील की है। फली सिंह दताल, गंगा सिंह पांगती द्वारा सभी वार्षिकोत्सव को सफल बनाने का आह्वान किया गया है।

बताते चलें कि दारमा घाटी के दांतू की लला जसुली शौक्याणी की बनवाई गई अनगिनत धर्मशालाओं की जीणक्षीर्ण हालत देख उनके बंशज और जागरुक जनों द्वारा अभियान चलाया गया। शासन प्रशासन को भी लगातार पत्राचार हुए जिससे सबका ध्यान इस ओर है और इन पर कब्जे हटाने, इनके जीर्णोद्धार, साज सज्जा की दिशा में कार्य हुआ है। समाज सेवी अशोक गर्ब्याल सहित तमाम लोग इस नेक कार्य में बराबर योगदान देते रहे हैं। सभी के प्रयासों से संस्था का गठन भी हुआ जिसका वार्षिकोत्सव सभी को और ज्यादा उत्साह देगा।

भीमताल में ई-रिक्शा संचालन होगा

भीमताल। नगर पालिका बोर्ड की बैठक मे पालिकाध्यक्ष सीमा टम्टा ने सभासदों के साथ चर्चा कर नगर के विकास के लिये कई प्रस्ताव पास किये। मल्लीताल, तल्लीताल, डांठ, विकास भवन और बाजार क्षेत्र में ई-रिक्शा संचालन के साथ स्वर्ग वाहन और हर वार्ड में स्ट्रीट लाइट के प्रस्ताव पास हुए।

रानीबाग-दानीजाला के बीच झूलापुल

हल्द्वानी। रानीबाग-दानीजाला के बीच झूलापुल की तैयारी है। इससे दानीजाला में रहने वाले दो दर्जन परिवारों को गौला नदी पार कर रानीबाग आने में सुविधा होगी। लोनिवि ने सर्वे के बाद इसका प्रस्ताव तैयार किया है। बताते चलें कि दानीजाला निवासी मानसून के दौरान ट्राली के सहारे आना-जाना करते हैं। वर्ष 2004 से यहाँ पुल बनाने की बात छिड़ी जो अब पूरी होने की उम्मीद है।

होलियों में गूंजते रहे प्रेमचन्द के वचन
हास-परिहास के साथ प्रतिकार भी किया जाता है इस त्यौहार में

उत्तराखण्ड सरकार में मंत्री प्रेमचन्द अग्रवाल द्वारा सदन में जोश में जिस प्रकार से ऊँची आवाज में बोला गया था उसकी गूंज होलियों में है। पूरी तरह से नाराज पर्वतीय समाज ने मंत्री के व्यवहार और उनकी मनोवृत्ति को लेकर सवाल उठाए हैं। ऐसे में प्रेमचन्द भाजपा की गले की हड्डी बन चुके हैं।

पहाड़ की होली परम्परा में हास-परिहास के साथ प्रतिकार भी किया जाता रहा है। देश की आजादी के लिये लड़े जा रहे आन्दोलन में गीतों के माध्यम से विरोध दर्ज किया था और कुली बेगार प्रथा की होली जलाई गई थी। जब-जब समाज को छेड़ा गया वह रोष के रूप में वापस मिला है। ऐसा ही इस बार की होली में है।

बैठकों, सभाओं, चर्चाओं में एक मंत्री द्वारा पर्वतीय जनों के लिये किये गये व्यवहार पर आक्रोश है। हालात को देखते हुए भाजपा ने अपने मंत्री को सख्ती हिदायत दी है। पार्टी अध्यक्ष ने बैठक कर उन्हें अनर्गल बातों से बचने को कहा है। सीएम पुष्कर सिंह धामी ने इस प्रकार की बात न होने को कहा।

नेता प्रतिपक्ष करन माहरा, पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत सहित तमाम नेताओं ने आश्चर्य जताया कि सत्ता पक्ष का एक मंत्री सदन में प्रदेशवासियों के लिये इस प्रकार से बोल बोल रहे हैं। विधायक हरीश धामी ने मंत्री प्रेमचन्द की ओर से दी जा रही सफाई और तोड़-मरोड़ कर पुराने वीडियो को उछालने पर रोष जताते हुए कहा है कि इस बार तो उन्हें माफ कर दिया है। यदि सदन में फिर से इस प्रकार की गलती की तो उन्हें करारा जबाव दिया जायेगा। पहाड़ की जनता की चुप्पी को कमजोरी न समझा जाए।

पूर्व मुख्यंत्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत ने प्रेम चन्द द्वारा विधानसभा में दिये गये बयान को घोर आपत्तिजनक बताते हुए कहा कि अग्रवाल ने सदन में जो भी कहा वह उचित नहीं है। किसी भी जिम्मेदार व्यक्ति से ऐसे वक्तव्य की अपेक्षा नहीं की जा सकती है। प्रेमचन्द संसदीय कार्यमंत्री हैं। विधानसभा के अध्यक्ष रहे हैं और बई बार के विधायक हैं। ऐसे में इस तरह का आचरण और भाषा को कोई उचित नहीं ठहराया जा सकता है। कहा कि हमें सौहार्द बनाए रखना चाहिये।

प्रताप नगर विधानसभा टिहरी के विधायक विक्रम सिंह नेगी ने ऐलान ही कर दिया कि जिले के प्रभारी मंत्री प्रेमचन्द अग्रवाल की अध्यक्षता में होने वाले जिला योजना की बैठकों का बहिष्कार करेंगे। कांग्रेस विधायक ने मंत्री प्रेमचन्द के व्यवहार पर रोष जताते हुए कहा कि सदन में पहाड़ के लिए अमर्यादित शब्द का इस्तेमाल करना उत्तराखण्ड की अस्मिता पर हमला है।

परिक्रमा

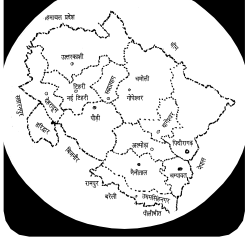

उत्तर भारत का प्रसिद्ध पूर्णागिरी मेला आरम्भ

टनकपुर। उत्तर भारत का प्रसिद्ध पूर्णागिरी मेला आरम्भ हो चुका है। मेला होली के अगले दिन से आरम्भ हो जाता है लेकिन दूर-दराज मैदानी क्षेत्रों से आने वाले यात्री मनोकामनाओं के साथ कई दिन की पैदल यात्रा कर पहले से पहुँचने लगते हैं। मेले को देखते हुए प्रशासन ने तैयारी की है। शारदा घाट सहित विश्राम स्थलों व मार्ग पर विद्युत-पेयजल व सुरक्षा व्यवस्था की गई है।

होली की हार्दिक शुभकामनों के साथ-

धीरेन्द्र/धीरु
धर्मशक्तू
अध्यक्ष व्यापार संघ
(पुत्र स्व. कुंवर सिंह धर्मसक्तू)
तल्ली बाजार
जौलजीवी

जंगपांगी
क्लीनिक
(सरकारी अस्पताल के निकट)
बागेश्वर
डा० कैलाश जंगपांगी

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

सदियों पुरानी सांस्कृतिक विरासत है कुमाऊँ की शास्त्रीय होली

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

देश भर में जहाँ रंगों से भरी होली फाल्गुन माह में गाई व खेली जाती है, वहीं कुमाऊँ की परम्परागत कुमाउंनी होली की एक विशिष्टता बैठकी होली यानी अर्ध शास्त्रीय गायकी युक्त होली है, जिसकी शुरुआत पौष माह के पहले रविवार से ही विष्णुपदी होली गीतों के साथ हो जाती है। शास्त्रीयता का अधिक महत्व होने के कारण शास्त्रीय होली भी कही जाने वाली कुमाऊँ की शास्त्रीय होली की शुरुआत करीब 10वीं शताब्दी में चंद शासनकाल से मानी जाती है। कुछ विद्वानों के अनुसार चंद शासनकाल में बाहर से ब्याह कर आयीं राजकुमारियां अपनी परम्पराओं व रीति-रिवाजों के साथ होली को भी यहाँ साथ लेकर आयीं। वहीं अन्य विद्वानों के अनुसार प्राचीनकाल में यहाँ के राजदरबारों में बाहर के गायकों के आने से यह परम्परा आई है।

कुमाउनी होली कमोबेश शास्त्र व लोक की कड़ी तथा एक-दूसरे से गले मिलने में आपसी प्रेम बढ़ाने वाले त्योहारों की झलक भी दिखाती है। साथ ही कुमाउंनी होली में प्रथम पूज्य गणेश से लेकर गोरखा शासनकाल से पड़ोसी देश नेपाल के पशुपतिनाथ शिव की आराधना और ब्रज के राधा-कृष्ण की हंसी-ठिठोली से लेकर स्वतंत्रता संग्राम और उत्तराखण्ड आन्दोलन की झलक भी दिखती है। यानी यह अपने साथ तत्कालीन इतिहास की सांस्कृतिक विरासत को भी साथ लेकर चली हुई है।

इसका इतिहास प्रदेश की सांस्कृतिक राजधानी अल्मोड़ा की स्थापना से भी पूर्व का है। खड़ी होली का मूल स्वरूप काली कुमाऊँ से खड़ी होली के स्वरूप में आया होगा, लेकिन चंद वंशीय शासकों की राजधानी अल्मोड़ा में उस दौर के प्रख्यात शास्त्रीय गायक अमानत अली खाँ और गम्मन खां की शागिर्द ठुमरी गायिका राम प्यारी जैसी गायिकाएं यहीं आई और स्थानीय शास्त्रीय संगीत के अच्छे जानकार शिव लाल वर्मा आदि उनसे संगीत सीखने लगे। वह 14 मात्रा में पूरी राग-रागिनियों के साथ होली गाते थे। ऐसे ही अन्य बाहरी लोगों के साथ कुमाउंनी होली में ब्रज, अवध व मगध के अष्टछाप कवियों के ईश्वर के प्रेम में लिखे गीत आए। कालान्तर में होलियों का मूल शास्त्रीय स्वरूप वाचक परम्परा में एक से दूसरी पीढ़ी में आते हुए और शास्त्रीय संगीत की अधिक गहरी समझ न होने के साथ लोक यानी स्थानीय पुट से भी जुड़ता चला गया।

इस होली की एक और खासियत यह भी है कि यह पौष माह के पहले रविवार से ही शुरू होकर फाल्गुन माह की पूर्णिमा तक सर्वाधिक लम्बे अन्तराल तक चलती है। इसके पीछे तर्क दिया जाता है कि (प्राचीन काल में) शीतकाल में पहाड़ों में कृषि व अन्य कार्य सीमित होते थे। ऐसे में लम्बी रातों में मनोरंजन के साधन के तौर पर भी होली गायकी के रात-रात लम्बे दौर चलते थे। यह परम्परा आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में देखी जाती है। इसमें विभिन्न प्रहरों में अलग अलग शास्त्रीय रागों पर आधारित होलियां गाई जाती हैं। शुरुआत बहुधा धमार राग से होती है, और फिर सर्वाधिक काफी व पीलू राग में तथा जंगला काफी, सहाना, बिहाग, जैजैवन्ती, जोगिया, झिंझोटी, खमाज सहित अनेक रागों में भी बैठकी होलियां गाई जाती हैं। अनेक बार सामाजिक और समयामयिक आन्दोलनों में यहाँ के होली गीतों को माध्यम बनाने का जो अभिनव प्रयोग किया गया है। यह भी एक तरह से यहाँ की होली की बड़ी विशेषता है।

होली गीतों की तर्ज पर कवि गौर्दा व बाद में चारू चन्द्र पाण्डे व गिर्दा ने जिन होली गीतों को रचकर सामाजिक चेतना व आन्दोलन से जोड़ा वह अद्भुत कार्य था। स्वतंत्रता संग्राम के दौर में गौर्दा की होलियों तथा बाद में पहाड़ के वन व शराब आन्दोलनों में गिर्दा ने जिन गीतों ने भूमिका निभाई वह बहुत महत्वपूर्ण था। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान पहाड़ के लोगों में देश प्रेम की भावना पैदा करने में अल्मोड़ा के लोक कवि गौर्दा की होलियों का बड़ा योगदान माना जाता है। उनकी एक कुमाउंनी होली इस तरह है-

होली अजब खिलाई मोहन अवतार कन्हाई
सूत कातकर चरखे से मोहन खद्दर चीर पहनाई।
विदेशी माल गुलाल उड़ायो स्वदेशी रंग उड़ायी
गोरे सब नाचे नाच रंग बिरंगी पिचकारी मारी
स्वराज पताका उड़ायी जी हुजुरों को भांग पिलाई.....

परम्परागत तौर पर वर्षों से यहाँ की होलियां सामाजिक समरसता, सामूहिक एकता व भाईचारे का भी प्रतीक रही हैं। आज भी घर-घर आशीष दिया जाता है।

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
मो.- 9458920379, 6396098804
YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन) मो. 9760007148
www.mountainheights.in

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड, दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान)
मो.- 9760342346

होली की हार्दिक शभुकामनाएं

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236 8958525979, 9411134775

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

MARTOLIA FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi, Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

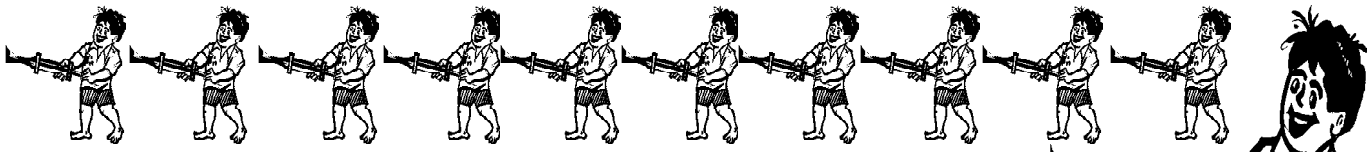

रंगों के
इस
त्यौहार की
हार्दिक
शुभकामनाओं
के साथ-
Enjoy
Beauty of
Himalaya at
MARTOLIA
LODGE
Family
Guest
House-
Sarmoly,
Munsiyari
A Home
Away From
Home &
Home Stay
Phone: (05961)
222287

कह दीजो रघुनाथ भरत से

कह दीजो रघुनाथ भरत से कह दीजो।2
राजा दशरथ बांस काटन गये, अंगूठा लागी फांस।। कह दीजो.
पहला पहरा रानी कौशल्या, नैनन नींद न होय। कह दीजो....
दूसरा पहरा रानी सुमित्रा, चैन कछू न होय। कह दीजो....
तीसरो पहरो रानी कैकई का, घुर-घुर निंदिया सोय। कह दीजो.....
मांग ले रानी जो वर मांगे, जो मन इच्छा होय। कह दीजो.....
जो मैं मांगू ना देवे राजा, वचन अकारथ होय। कह दीजो.....
जो तू मांग ले रानी, राम शपथ हम खाय। कह दीजो.....
पहले वर से रामचन्द्र को वनवास हो दीजै।
दूजै भरत को राज, भरत से कह दीजो। कह दीजो.....
राम लछीमन वन को गये हैं, सीता लगी साथ,
भरत से कह दीजो। कह दीजो.....

सरयू तट राम खेलें होरी

सरयू तट राम खेलें होरी, जमुना तट श्याम खेलें होरी।
दौड़ी-दौड़ी सब मारे पिचकारी, बाल सखा संग खेलें होरी।
अबीर गुलाल के पात्र भरे हैं, सात रंगों से भरी पिचकारी।
जमुना तट श्याम खेलें होरी।...

तू करि ले अपनो ब्याह देवर

तू करि ले अपना ब्याह, देवर हमरा भरोसा झन करियो।
मैंने बुलाया एकलो हो एककी एकलो
तू ल्ही आयो जन चार, देवरा हमरो भरोसो....
मैंने बुलाया बागा में ही गागा में।
तू ले आयो घर द्वार, देवरा हमरो भरोसा.....
मैंने मंगाया लहंगा रे लहंआ।
तू लाये चेसनार, देवरा हमारा भरोसा.....
तू झन करिए एतबार देवरा हमरो भरोसा झन करिया।।

खुशियों का
यह
त्यौहार नई
उमंग दे।
शुभकामनाओं
के साथ-
घर से बाहर
अपनों का साथ
होटल
लक्ष्य
इन
मदकोट
नरेन्द्र सिंह
रावत
सम्पर्क
7351285555

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)